‘ मिनाक्षी ’

ज्योतिबा अशोक

ज्योतिबा अशोक

भूमिका

हर एक के मन में हजारों छिपे जज्बात होते है कुछ को कई बार अलफ़ाज़ मिल जाते है तो कुछ जज्बात मन की गहराइयों में हमेशा-हमेशा के लिए दफ्न हो जाते है | मैंने भी अपने जज्बात को मन कि गहराइयों से निकाल कर अल्फाजो में ढालने की कोशिश की है | कोशिश है कि मेरे जज्बात आप तक पहुचे | अब इसमें मै कितना सफल हुआ हू ये फैसला आपका रहा |

ये मेरी पहली शुरुवात है Ebook के माध्यम से |

इस किताब में एक कोख की बेटी, एक जवान होती लडकी, एक दुल्हन तो एक माँ के दर्द, उल्लास उसकी सोच को दर्शाने की कोशिश की है |

मैंने मीनाक्षी के दर्द को वर्णन करने कि भी कोशिश की है | जी हां वही जो कुछ समय पहले देल्ही में इंसानी दरिंदों, भेडियो की शिकार हुई थी और हम कुछ न कर सके |

मेरी ये किताब उसी के नाम पर रखी गयी है | आगे आप खुद देखे |

- " ज्योतिबा अशोक "

Mail at: ashokjyotiba@gmail.com

.

अनुक्रम

01. छोटी सी हत्या
02. बच गई मैं
03. पूछती हूँ तुमसे
04. एक कहानी
05. अच्छी नही लगती न
06. औरत
07. मीनाक्षी
08. मेरी गुड़िया
09. बुढ़िया
10. माँ

|| छोटी सी हत्या ||

एक छोटी सी हत्या

जिसपे विलापन ही

कोई शोक न ही

हो उदास मन,

कोई टोक नही

एक छोटी ही हत्या

जिस पे सोच नही

कोई दर्द नहीं

हो जिस का इलाज,

उभरे घाव नही

एक छोटी सी हत्या

जिस पे अफ़सोस नही

कोई निगाह नही

कोई उपाय जिसका,

कोई फर्क नही

एक छोटी सी हत्या

अपने मन की

अपने जमीर की

अपने विश्वास की

अपने इंसानियत की

मगर.,

कोई निगाह नही

कोई दर्द नही

हो उदास मन

कोई टोक नही

एक छोटी सी हत्या!!

एक छोटी सी हत्या!!?

--*-*-*-*-*

|| बच गई मैं ||

उफ़ ताने, हाय नज़रे

दरिंदो के विचार से

घिरी रही हर वक़्त,

डर, शर्म के छाँव से

तौबा दुनिया, मिटे निंदिया,

खत्म हो मेरी हाय से

डूबी रही हर पल,

उलझन, अंशुभाव से

इन सबसे

चलो बच गई मैं!?

कोख में हुई जो मौत से

??बच गई मैं

--*-*-*-*-*

|| पूछती हूँ तुमसे ||

मैं पूछती हूँ तुमसे मैं कौन हूँ?

मेरे जिक्र में तुम मुझे पराया कहते हो!

सजाते हो तुम मुझे!

सवारते हो तुम मुझे!

फिर किसी और का अमानत कहते हो!

मैं पूछती हूँ तुमसे तुम कौन हो?

अपने जिक्र में तुम मुझे लहू कहते हो!

तुलसी बनाते हो तुम मुझे!

बहुरानी बनाते हो तुम मुझे!

और फिर तुम अपनी वसीयत कहते हो!

मैं पूछती हूँ तुमसे मैं कौन हूँ?

मेरे जिक्र में तुम मुझे बेटी कहते हो!

गाते हो तुम मुझे!

हंसाते हो तुम मुझे!

और फिर तुम मुझे अपनी जमानत कहते हो!

मैं पूछती हूँ तुमसे तुम कौन हो?

अपने जिक्र में तुम मुझे पगड़ी कहते हो!

ससुराल को घर मेरा बताते!

मायका हरदम खुला रखते!

ये सब रिस्तो का एक खेल कहते हो!

मैं पूछती हूँ तुमसे मैं कौन हूँ?

मैं पूछती हूँ तुमसे तुम कौन हो?

--*-*-*-*-*

|| एक कहानी ||

एक कहानी बताती हूँ मैं क्या हूँ

ये मर्द क्या जाने?

ये नेक दिल फरिस्ते, ये खुदा क्या जाने?

मैं एक औरत हूँ

ये मेरे बच्चे क्या जाने?

मेरे जिगर मेरा सुहाग, मेरा बाप क्या जाने?

मैं एक सोच हूँ

ये पहलवान क्या जाने?

ये खूंखार भेड़िये, ये जिस्म फरोस्त क्या जाने?

मैं आइना हूँ

ये बहरूपिये क्या जाने?

ये तमाशे खेल, मंच के कठपुतलियां क्या जाने?

मैं गीता, कुरान हूँ

ये बोली क्या जाने?

देश विदेश तौर तरीके, ये मर्दों के अकड़ क्या जाने?

अब सुनो मैं क्या नही हूँ

ये दौलत क्या जाने?

ये रिवाज़ धर्म, मुझसे वजूद पाने वाले क्या जाने?

मैं तवायफ नही हूँ

ये रात क्या जाने?

ये तराशते मेरे बदन, ये बेख़ौफ़ दरिंदे क्या जाने?

मैं कमीज़ नही हूँ

ये भुसाचार क्या जाने?

ये शौख, ये अमीर, ये मोटे मोटे सेठ क्या जाने?

मैं अबला नही हूँ

ये मुस्कुराने वाले क्या जाने?

ये खरीददार क्या जाने? ये दुकानदार क्या जाने?

मैं खिलौना, औज़ार नही हूँ

ये खेलने वाले, इस्तेमाल करने वाले क्या जाने?

मैं बनती ईमारत नही हूँ

मैं एक गुरुर हूँ ये इंसान, इंसानो के देवता क्या जाने?

मैं खान की पत्थर हूँ

रास्ते की ठोकर नही हूँ

--*-*-*-*-*

|| अच्छी नही लगती न ||

तुम लाये मुझे शहर,

क्योंकि मैं तुम्हे अच्छी नही लगती न

बेच आये मुझे शहर,

क्योंकि मैं तुम्हे अच्छी नही लगती न

दे आये जिसे शहर,

क्योंकि उसे भी मैं अच्छी नही लगती न

जालिम, दरिंदा, बेदर्द शहर,

घूरता, नापता, छोड़ता अच्छी नही लगती न

ये मुझपे तरसता शहर,

बाँहो में रख उतार देता अच्छी नही लगती न

उस मुहल्ले से इस मुहल्ले

उफ़्फ़ छोड़ जरा सेठ अच्छी नही लगती न

भेड़िया नाम का शहर,

नोचता, चखता, ठुकराता, अच्छी नही लगती न

देख रही हूँ ये शहर,

घुमाता रात को दिन में अच्छी नही लगती न

समझ रही हूँ ये शहर,

बड़े छोटे सब ही रुलाते अच्छी नहीं लगती न

छोड़ आउ क्या शहर,

मगर तुम्हे भी तो मैं अच्छी नही लगती न

क्या जानू तुम्हे शहर,

कौन हो तुम, तुम्हे भी तो अच्छी नही लगती न

जिऊँ झूठ लिए शहर,

आप ही आपको अब अच्छी नही लगती न

--*-*-*-*-*

|| औरत ||

बला की खूबसूरत रही मैं मगर हर बार बेचीं गई
जिस दरिंदे की बोली बड़ी रही उसी को बेचीं गई

आया था वो रूप बदल बदल कई बार मेरे सामने
कभी कोठा, कभी पति नाम भेड़िये को बेचीं गई

अस्मिता लूटी गई, नारी होने का गुरुर तोडा गया
शरीफ घराने के कई ही चेहरे थे जिन को बेचीं गई

अपनों ने रुख मोड़ लिया जिन के सहारे बन सकती
गरीबो ने अपनी अपनी सोची मैं सरे-आम बेचीं गई

बेटी थी ये गुनाह था या औरत थी ये अभिशाप था
मैं वो पहली चीज़ बनी जो पैसो के साथ बेचीं गई

नाटक करता रहा जमाना बेटी हो, बेटी हो, बेटी हो
जिसके हाथो बिकी मुकरर्नामे के साथबेचीं गई

घर बदले मायने नही बदले मेरे बस बेटी बनी बहु
अब तो जमींदार की जमीन समझ कर मैं बेचीं गई

रूह के जख्म अभी हरे थे, कोई नमक डाल गया
बता गया मेरा ही अतीत कब और मैं कैसे बेचीं गई

बला की खूबसूरत रही मैं मगर हर बार बेचीं गई
जिस दरिन्दे की बोली बड़ी रही उसी को बेचीं गई

|| मीनाक्षी ||

लो बीत गई ईद.,

अब राखी की बारी हैं

लो निपट गई मीनाक्षी,

अब नेहा की बारी हैं

बंट रहा होगा ईदी.,

अब मिठाई की बारी हैं

लुट रही होगी ज्योति.,

अब निशु की बारी

झूम रहि होगी दरिंदगी.,

अब दरिंदे बाहूबली हैं

चीख रही होगी ममता.,

अब कमला की बारी हैं

गले मिलती होगी टोपी.,

अब भगवा धागे की बारी हैं

खून से लथपथ होगी निलू.,

अब आयशा की बारी हैं

तब निर्भया रो रही होगी.,

अब उसके साख़ की बारी हैं

तड़प रही होगी निलम..

अब भारती की बारी हैं

सियासत हो रही होगी.,

अब वोट बैंक की बारी हैं

सिसक रही होगी गजाला..

अब शबाना की बारी हैं

हमारी ईज्जतदार आँखे देख रही होंगी.,

अब हमारे, तुम्हारे घर की बारी हैं

कही बिक, कही नोची जा रही होगी लिली...

अब निलोफ़र., पूजा., लुसी की बारी हैं

--*-*-*-*-*

|| मेरी गुड़िया ||

मेरी गुड़िया अब ससुराल अपना हिस्सा ले कर जाती हैं
ये वो जमाना हैं जहाँ लौकी भी काटकर बेचीं जाती हैं

सब घड़ियाली हो गए हैं सब शहर में कोई भी नही बचा
अब दिल रगड़ कर, पत्थर की बनाई मोती बेचीं जाती हैं

पानी गर्म करने वाली उस मासूम से बिस्तर गर्म होता हैं
शहर के ऊँचे से ऊँचे मकान में इंसानियत बेचीं जाती हैं

भटक आता हैं जब भी इंक़लाबी जेहन में अपना भारत
सजता हैं बाजार धर्म का, फिर देश भक्ति बेचीं जाती हैं

कहती हैं माँ वो सौ-दो-सौ में ख़ैरात तक भी बचाती थी
अरे अब तो हज़ार पाँच छःसौ में नमक भी बेचीं जाती हैं

बहूत भीड़ होती हैं अब बरातियों की न जाने ये क्यों. ..!?
इसी बारात में हाथ सजी दुलहन की मेहँदी बेचीं जाती हैं

और भी तो बहुत कुछ हैं इस जहाँ में बनाने को तस्वीर
पर मेरी इस तरह की कलम थोड़ी कीमती बेचीं जाती हैं

मुझे कोई खास शौक नही आईना दिखाने का "अशोक"
मगर ऐसे हक़ीक़त बाजार में बहुत जल्दी बेचीं जाती हैं

|| बुढ़िया ||

वो देखती रह गई किसने क्या बाँट लिया
उसके बच्चों ने उसका निवाला बाँट लिया

माँ बोली की ये बच्चे नादान हैं जरा उलझे हैं,
रिश्तेदारों ने अपना सारा हिस्सा बाँट लिया

वो चुपचाप चुनती रही बिखरे ख्वाबो को,
मजाक ही में बच्चों ने ईट-ईट बाँट लिया

मालकिन थी वो एक खूबसूरत बाग की,
बेटियो ने गुठली गुठली का दाम बाँट लिया

सोती रही हैं रात भर बरामदे में वो बुढ़िया,
कल की आई बहुओ ने कमरा बाँट लिया

अब उसका बूढ़ा, उसके साथ नही रहता,
उसके मासूम बेटो ने तो माँ-बाप बाँट लिया

करती भी क्या वो शिकायत मिला देने की,
हुकूमत ने भी तो सबका रिश्ता बाँट लिया

वो जिन्दा रही अब मर जाने के लिए फकत,
अंगूठे को तो प्यारा छोटा लड़का बाँट लिया

उसे तो फिर भी संतोष था अपनी मौत पे,
मगर पोते पोतियों ने तो कफ़न बाँट लिया

वो मर कर भी न मरी, सबने हिसाब ले लिया

उसके हाथो की पीतल उसका नाती ले लिया

वो देखती रह गई किसने क्या बाँट लिया

उसके बच्चों ने उसका कालेज बाँट लिया

--*-*-*-*-*

|| माँ ||

आखिर छल कही आये झुर्रियो पे मोती,
शहरी बेटे ने मकबरे से हाल-चाल पूछा
वो तो हिलती डुलती बोलती भी नही हैं,
मगर निकले आँसु लाल ने ख्याल पूछा

कल तक देखा था चेहरे पे मक्खी बैठते,
आज उस बेजान शरीर में मैंने जां देखा
शिकस्त खाया साहिल दरिया बह पड़ा,
हिलोरे ली आँखे उसने जो सवाल पूछा

उसे तो पर वाहन रहा किसी भी यम का,
हिले होंठ हंसते, दुआ बरसते, बुदबुदाते
पत्थराई फेफड़े लो जी फिर से चल पड़े,
करवट बदला जो बेटे ने खान-पान पूछा

पंजर की आँखों में रौशनी न जाने कैसे?
वो मुर्दा अभी मुर्दा न बना था कसक थी
देखी अपनी हकीम और हिल-डुल पड़ी
बेटा जब माँ के तबियत का ख्याल पूछा

लाश को आग लगे सो लगे जले सो जले,
जल गया लला माँ का मुँह यो खुला जो
हाँ उड़ी पंछी माथे को चूमते - पुचकारते
सबका फटा कलेजा, बेटे ने ये हाल पूछा

--*-*-*-*-*